

॥ अथ हनुमत् लोल लाङ्गुल स्तोत्र प्रारम्भः ॥

मन्त्रः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्रीमस्य श्री हनुमल्लाल
 लाङ्गुल शत्रुञ्जय स्तोत्र मन्त्रस्य ईश्वर ऋषिरनु-
 षुयद्वन्दः हनुमान् देवता हं बीजं स्वाहा शक्तिः
 हाहाहा इति कीलकम् मम शत्रु क्षयार्थे जेय
 विनियोगः ॥ अथ करन्यासः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं नमः
 अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रीं रामदूताय तर्जनीभ्यां
 नमः ॥ ॐ ह्रीं अक्षय कुमार विध्वंस^सकाय मध्यमा

॥ह०लो०॥

१॥

भ्यां नमः ॥ ॐ ह्रीं लङ्का दाहकाय अनामिकाभ्यां नमः
ॐ ह्रीं रुद्रावताराय कीर्तिष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रीं सक
ल शत्रु संहारणाय करतल कर वृष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रीं
आर्जेनेयाय हृदयाय नमः ॥ ॐ ह्रीं रामदूताय शिरसे
स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं अक्षय कुमार विध्वंसकाय मध्वसि
षाये वषट् ॥ ॐ ह्रीं लङ्का दाहकाय कवचाय हुम् ॥

॥३॥

ॐ ह्रीं रुद्रावताराय नेत्र त्रयाय वीषट् ॥ ॐ हः सकल

शत्रु संहारणाय अस्त्राय फट् ॥ अथ माला मन्त्रः

ॐ नमो भगवते श्री हनुमते महाबल पराक्रमाय महा-

ति यत्ति निवारणाय भक्त जन मनः कल्पना कल्प-

द्रुमाय दुष्ट जन मनोरथ स्तम्भ नाय प्रभञ्जन प्राण प्रिया-

य ॐ नमो हनुमते त्रैलोक्या क्रमण पराक्रम श्रीराम

ॐ

॥ ह. लो. ॥ भक्त मम (परस्य च) चातुर्वर्ग्य संभवान् पुंस्त्री नयु-
 २॥ सकान भूत भविष्य दुर्तमाना दूरस्थ समीपस्थान (नाना
 नाम धेयान् नाना संकर जातीयान्) कलत्र युन्न मित्र
 भृत्य सुहृत्समेतान् प्रभु शक्ति संहितान् धन धान्य स-
 म्यत्ति युतान् राज्ञो राजसेवकान् मन्त्रि सचिव सखी-
 न आत्यंतिकान् क्षणेन त्वरया (शीघ्रतरेण) एतद्दिना

॥ २५ ॥

वधिना नानो पायै मारय मारय शरत्रै श्रेदय द्रव्य अ-
 ग्निना ज्वालय ज्वालय दाहय दाहय असय कुमारवत्
 पादतला क्रमेण शिल्पा तले आत्रोटय आत्रोटय घातय
 घातय बन्धय बन्धय भूत संघै स्मह भक्षय भक्षय क्रुदु
 चेतसा नरै विदारय विदारय देशा दस्मा दुश्चाटय दुश्चा-
 टय पिशा च वदुशय भ्रंशय भयातुरान विसंज्ञान् सद्यः

कुरु कुरु भस्मी भूतान उद्धृतय उद्धृतय भक्तजनक
 त्मल सीता शोकापहारक सर्वत्र मां (^{जनमानम्} एनं च) रक्ष रक्ष
 हा हा हा हुं हुं हुं घे घे घे कट स्वाहा (ध्यानम्) श्रीमन्त
 हनुमन्त मन्त्र रिपुभिर्दूभृत्तरु भ्राजितं वेगाद्वारिधि बहु
 वैरि निचयं चामी कराद्रि प्रभं रोषा रक्त पिशङ्गु नेत्र

नीलिन भूमङ्ग मङ्ग स्फुरत् प्रोद्यं चण्ड मयूरव मण्डन
 मुरं दुःखाय हं दुःखितम् ॥१॥ कौपीनं कीट सूत्र मो-
 ऽय जिन युक्त देहं विदेहात्मजा प्राणाधीश यदार विन्द
 निहित स्वान्तं कृतान्तं द्विषां ध्या त्वैवं समराङ्गणस्थि-
 त मथा नीय स्वहृत् तं यङ्गुजे सम्यज्या खिल पूजनोक्त

॥ ह० लो० ॥

चन्दन पुष्पा
धूप दीप नैवेद्य
मन्त्रा मधु
पञ्चोपचारैः सम्पुज्य पाठः कार्यः

॥ ४४ ॥

विधिना संप्रार्थये प्रार्थितम् ॥ २॥ हनुमन्त श्रुती सूने

महाबल पराक्रम लोल लाङ्गुल पातेन ममारोगिनिपात-

य ॥ १॥ मर्कटाधिप मार्तण्ड मण्डल ग्राम कारक ॥ लो० ॥ ३॥

अक्षक्षपण ^{ज्वा}पिमाक्ष क्षितिजा शुग्विनाशन ॥ लो० ॥ ३॥

रुद्रावतार संसार दुःख भारा पहारक ॥ लो० ॥ ४॥

॥ ४५ ॥

श्री राम चरणाम्भोज मधु पायित मानस ॥ लो० ॥ ५ ॥

बालिकाल रद क्लान्त सुग्रीवो न्मोचन प्रभो ॥ लो० ॥ ६ ॥

सीता विरह बरिश मग्न सीतेश कारक ॥ लो० ॥ ७ ॥

रक्षो राज प्रताप्याग्नि दह्य मान जग दुन ॥ लो० ॥ ८ ॥

ग्रस्ता शेष जगत्स्वास्थ्य राक्षसा म्भाधि मन्दर ॥ लो० ॥ ९ ॥

॥ ह० लो० ॥

॥ ५॥

पुच्छ गुच्छ स्फुरद्भुमानलं दग्धारि यत्तन ॥ लो० ॥ १० ॥

जगन्मनो दुरुल्लंघ्य पारावार विलंघन ॥ लो० ॥ ११ ॥

स्मृतमात्र समस्तैष्ट पुरक प्रणत प्रियय ॥ लो० ॥ १२ ॥

रात्रिं चरचमूं राशिं कर्त्तनैक विकर्त्तन ॥ लो० ॥ १३ ॥

जानकी जानकी जानि प्रेम यात्र परंतप ॥ लो० ॥ १४ ॥

॥ ५॥

भीमादिक महावीर वीर वेषा वतारक ॥ लो० ॥ १५ ॥

वैदेहि विरह क्लान्त राम रोषै कनिग्रह ॥ लो० ॥ १६ ॥

वज्राङ्गु नरव दंष्ट्रेश वज्रिवज्राव गुंठन ॥ लो० ॥ १७ ॥

अखर्व गर्व गन्धर्व यर्वतो द्वेद नश्वर ॥ लो० ॥ १८ ॥

लक्ष्मण प्राण संन्नाण भ्रात तीक्ष्ण करान्वय ॥ लो० ॥ १९ ॥

॥६॥ लो॥

॥६॥

रामादि विप्रयोगार्त्त भरता द्यति नाशन ॥लो॥ २०॥॥

द्रोणा चल समुत्सेय समुत्क्षित्यारि वैभव ॥लो॥ २१॥

सीताशीर्वाद सम्यन्न समस्ता वय वक्षत ॥लो॥ २२॥

इत्येव मश्वत्थ तलाय विष्टः शत्रुं जयं नाम येठत्स्व-

यः स शीघ्रमेवास्त सप्तस्त शत्रुः प्रमादते मारुत

॥६॥

हनुमान लाल लाङ्गूल स्त्र
* समाप्तम् *